



आत्मनिर्भर भारत की दिशा में वर्तमान शिक्षा व्यवस्था: चुनौतियाँ, संभावनाएँ एवं सुधार

डॉ. संतोष कुमार भारती

असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षा-शास्त्र विभाग, उदित नारायण स्नातकोत्तर महाविद्यालय, पडरौना, कुशीनगर, उ.प्र., भारत

Email: sankumar4464@gmail.com

सारांश (Abstract)

आत्मनिर्भर भारत का विचार केवल आर्थिक आत्मनिर्भरता तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक तथा तकनीकी आत्मनिर्भरता का भी व्यापक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। वर्तमान समय में शिक्षा किसी भी राष्ट्र के विकास का सबसे महत्वपूर्ण आधार मानी जाती है। शिक्षा के माध्यम से ही व्यक्ति में ज्ञान, कौशल, नैतिकता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और सामाजिक चेतना का विकास होता है। आधुनिक भारत में शिक्षा व्यवस्था तेजी से परिवर्तन के दौर से गुजर रही है। वैश्वीकरण, उदारीकरण, डिजिटलीकरण, तकनीकी विकास तथा नई शिक्षा नीति 2020 ने शिक्षा को नई दिशा प्रदान की है। प्रस्तुत शोध पत्र में आत्मनिर्भर भारत की अवधारणा, आधुनिक शिक्षा व्यवस्था की भूमिका, भारतीय संविधान के आदर्श, लोकतांत्रिक मूल्यों, आधुनिकीकरण, तकनीकी विकास, रोजगारपरक शिक्षा तथा वर्तमान शिक्षा प्रणाली की चुनौतियों और संभावनाओं का विस्तृत विश्लेषण किया गया है। साथ ही यह भी स्पष्ट किया गया है कि शिक्षा व्यवस्था किस प्रकार भारत को आत्मनिर्भर बनाने में सहायक हो सकती है।

मुख्य शब्द (Key word): आत्मनिर्भर भारत, शिक्षा व्यवस्था, आधुनिकीकरण, लोकतंत्र, नई शिक्षा नीति, तकनीकी शिक्षा, कौशल विकास, रोजगारपरक शिक्षा।

प्रस्तावना (Introduction)

भारत प्राचीन काल से ही ज्ञान, शिक्षा और संस्कृति का केंद्र रहा है। तक्षशिला, नालंदा और विक्रमशिला जैसे विश्वविद्यालय भारतीय शिक्षा की गौरवशाली परंपरा के प्रतीक रहे हैं। भारतीय समाज में शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान अर्जन नहीं था, बल्कि व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करना था। परंतु समय के साथ शिक्षा व्यवस्था में अनेक परिवर्तन हुए। विशेष रूप से औपनिवेशिक काल में शिक्षा का स्वरूप बदल गया और अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली ने भारतीय शिक्षा को नई दिशा दी।

आधुनिक भारत में शिक्षा व्यवस्था समाज के विकास, लोकतंत्र की मजबूती, वैज्ञानिक चेतना, सामाजिक समानता तथा आर्थिक उन्नति का प्रमुख आधार बन चुकी है। वर्तमान समय में जब विश्व वैश्वीकरण और तकनीकी क्रांति के दौर से गुजर रहा है, तब भारत के लिए आत्मनिर्भर बनना अत्यंत आवश्यक हो गया है। आत्मनिर्भर भारत का अर्थ केवल विदेशी वस्तुओं पर निर्भरता कम करना नहीं है, बल्कि शिक्षा, विज्ञान, तकनीक, उद्योग, कृषि, अनुसंधान और नवाचार के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनना भी है।

शिक्षा किसी भी राष्ट्र की प्रगति का मूल आधार होती है। यदि शिक्षा व्यवस्था मजबूत, व्यावहारिक और रोजगारपरक हो तो राष्ट्र का समग्र विकास संभव है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में तकनीकी शिक्षा, कौशल विकास, डिजिटल शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा तथा नवाचार आधारित शिक्षण को बढ़ावा दिया जा रहा है, जिससे युवाओं को आत्मनिर्भर बनाया जा सके।

आत्मनिर्भर भारत: अवधारणा और स्वरूप

आत्मनिर्भर भारत का अर्थ है – ऐसा भारत जो अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयं करने में सक्षम हो तथा आर्थिक, सामाजिक, वैज्ञानिक, तकनीकी और शैक्षिक क्षेत्रों में स्वावलंबी बने। आत्मनिर्भरता का अर्थ अलगाव नहीं, बल्कि अपनी क्षमता, संसाधनों और कौशल के आधार पर विकास करना है।

भारत सरकार द्वारा “आत्मनिर्भर भारत अभियान” की शुरुआत देश को आर्थिक और सामाजिक रूप से सशक्त बनाने के उद्देश्य से की गई है। इसका प्रमुख उद्देश्य देश में उत्पादन, नवाचार, कौशल विकास और रोजगार को बढ़ावा देना है। इस अभियान में शिक्षा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि शिक्षा ही व्यक्ति को आत्मविश्वासी, कुशल और सक्षम बनाती है।

आत्मनिर्भर भारत के प्रमुख आधार निम्नलिखित हैं –

1. गुणवत्तापूर्ण शिक्षा
2. कौशल विकास
3. तकनीकी एवं डिजिटल सशक्तिकरण
4. वैज्ञानिक दृष्टिकोण
5. अनुसंधान और नवाचार
6. रोजगारपरक शिक्षा
7. सामाजिक समानता और समावेशिता
8. लोकतांत्रिक मूल्यों का विकास



भारतीय समाज, लोकतंत्र और शिक्षा:

भारतीय समाज प्राचीन काल से विविधताओं से भरा हुआ समाज रहा है। प्राचीन भारतीय समाज में वर्ण व्यवस्था, सामाजिक असमानता और रूढ़िवादी परंपराओं का प्रभाव अधिक था। मध्यकाल और औपनिवेशिक काल में भी समाज अनेक सामाजिक बुराइयों से प्रभावित रहा। परंतु आधुनिक काल में सामाजिक सुधार आंदोलनों, शिक्षा के प्रसार और लोकतांत्रिक मूल्यों के कारण समाज में व्यापक परिवर्तन आए।

भारत का संविधान स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व, न्याय और धर्मनिरपेक्षता जैसे आदर्शों पर आधारित है। भारतीय लोकतंत्र की सफलता के लिए शिक्षित और जागरूक नागरिकों का होना आवश्यक है। शिक्षा व्यक्ति को अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूक बनाती है तथा लोकतांत्रिक मूल्यों के विकास में सहायता करती है।

लोकतंत्र का मूल उद्देश्य स्वतंत्रता एवं समानता की स्थापना करना है। स्वतंत्रता का अर्थ केवल राजनीतिक स्वतंत्रता नहीं, बल्कि सामाजिक और शैक्षिक स्वतंत्रता भी है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार है। शिक्षा के माध्यम से ही व्यक्ति अपने व्यक्तित्व का विकास करता है और राष्ट्र निर्माण में योगदान देता है।

भारतीय संविधान में शिक्षा को मौलिक अधिकार का दर्जा दिया गया है। संविधान का अनुच्छेद 21-ए सभी बच्चों को निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार प्रदान करता है। इससे स्पष्ट होता है कि शिक्षा राष्ट्र के विकास का मूल आधार है।

आधुनिकीकरण और शिक्षा:

आधुनिकीकरण का अर्थ है – समाज में वैज्ञानिक दृष्टिकोण, तार्किकता, तकनीकी विकास, नवीन विचारों और प्रगतिशील मूल्यों का विकास। आधुनिकीकरण समाज को रूढ़िवादिता, अंधविश्वास और संकीर्ण सोच से मुक्त करता है।

आधुनिक समाज में शिक्षा का स्वरूप भी परिवर्तित हुआ है। आज शिक्षा केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि व्यावहारिक, तकनीकी और रोजगारपरक बन चुकी है। आधुनिक शिक्षा व्यक्ति को वैज्ञानिक सोच, नवाचार, नेतृत्व क्षमता तथा समस्या समाधान की योग्यता प्रदान करती है।

आधुनिकीकरण के प्रभाव से जीवन के प्रत्येक क्षेत्र – जैसे कृषि, उद्योग, व्यापार, संचार, चिकित्सा, परिवहन, सूचना प्रौद्योगिकी तथा विज्ञान – में व्यापक परिवर्तन हुए हैं। शिक्षा ने इन परिवर्तनों को गति प्रदान की है।

वर्तमान समय में इंटरनेट, स्मार्ट क्लास, ऑनलाइन शिक्षा, डिजिटल प्लेटफॉर्म, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), रोबोटिक्स और ई-लर्निंग जैसी तकनीकों ने शिक्षा व्यवस्था को आधुनिक स्वरूप प्रदान किया है। इससे शिक्षा अधिक सुलभ, प्रभावी और गुणवत्तापूर्ण बनी है।

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की विशेषताएँ:

वर्तमान भारतीय शिक्षा व्यवस्था में अनेक महत्वपूर्ण परिवर्तन देखने को मिलते हैं। नई शिक्षा नीति 2020 ने शिक्षा को अधिक व्यावहारिक, कौशल आधारित और रोजगारपरक बनाने पर बल दिया है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं –

1. कौशल आधारित शिक्षा वर्तमान समय में शिक्षा का उद्देश्य केवल पुस्तक आधारित ज्ञान या डिग्री प्राप्त करना नहीं रह गया है, बल्कि विद्यार्थियों को जीवनोपयोगी, व्यावहारिक एवं रोजगारपरक कौशल प्रदान करना भी शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य बन गया है। इसी कारण आज “कौशल आधारित शिक्षा” (Skill-Based Education) की आवश्यकता और महत्त्व निरंतर बढ़ता जा रहा है। यह शिक्षा विद्यार्थियों को केवल सैद्धांतिक जानकारी तक सीमित नहीं रखती, बल्कि उन्हें वास्तविक जीवन की समस्याओं को समझने, उनका समाधान करने तथा आत्मनिर्भर बनने की क्षमता प्रदान करती है। कौशल आधारित शिक्षा का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों में ऐसी दक्षताओं का विकास करना है, जिनके माध्यम से वे रोजगार प्राप्त कर सकें, स्वरोजगार स्थापित कर सकें तथा समाज और राष्ट्र के आर्थिक विकास में सक्रिय योगदान दे सकें। इसमें तकनीकी कौशल, संचार कौशल, नेतृत्व क्षमता, समस्या समाधान क्षमता, रचनात्मकता, डिजिटल साक्षरता, उद्यमिता तथा टीमवर्क जैसे गुणों का विकास किया जाता है। आज के वैश्वीकरण, औद्योगिकीकरण तथा डिजिटल क्रांति के दौर में केवल पारंपरिक शिक्षा पर्याप्त नहीं मानी जाती। उद्योगों एवं विभिन्न कार्यक्षेत्रों में ऐसे युवाओं की आवश्यकता होती है, जो कार्य को व्यावहारिक रूप से करने में सक्षम हों। इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार ने “स्किल इंडिया मिशन”, “प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (PMKVY)” तथा नई शिक्षा नीति 2020 में कौशल विकास को विशेष महत्त्व दिया है। नई शिक्षा नीति के अनुसार विद्यालय स्तर से ही विद्यार्थियों को व्यावसायिक एवं तकनीकी शिक्षा से जोड़ने पर बल दिया गया है, ताकि वे प्रारम्भ से ही कार्यकुशल बन सकें। कौशल आधारित शिक्षा विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा देती है। यह शिक्षा बेरोजगारी की समस्या को कम करने में सहायक होती है क्योंकि विद्यार्थी केवल नौकरी खोजने वाले नहीं, बल्कि रोजगार उत्पन्न करने वाले भी बन सकते हैं। उदाहरण के लिए—कंप्यूटर प्रशिक्षण, डिजिटल मार्केटिंग, कृषि आधारित तकनीक, हस्तशिल्प, इलेक्ट्रॉनिक्स, फैशन डिजाइनिंग, मोबाइल रिपेयरिंग, वेब डिजाइनिंग, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) तथा अन्य तकनीकी पाठ्यक्रम युवाओं को स्वरोजगार के अनेक अवसर प्रदान करते हैं। इसके अतिरिक्त, कौशल आधारित शिक्षा विद्यार्थियों के आत्मविश्वास, व्यक्तित्व विकास तथा निर्णय क्षमता को भी सुदृढ़ बनाती है। जब विद्यार्थी किसी कार्य को व्यावहारिक रूप से सीखते हैं, तो उनमें कार्य के प्रति रुचि और जिम्मेदारी की भावना विकसित होती है। इससे शिक्षा अधिक प्रभावशाली, रोचक और उपयोगी बन जाती है। हालाँकि, भारत में कौशल आधारित शिक्षा के समक्ष कई चुनौतियाँ भी हैं, जैसे—ग्रामीण क्षेत्रों में संसाधनों की कमी, प्रशिक्षित शिक्षकों का अभाव, आधुनिक प्रयोगशालाओं एवं उपकरणों की कमी तथा समाज में व्यावसायिक शिक्षा के प्रति जागरूकता का अभाव। इसलिए आवश्यक है कि सरकार, शिक्षण संस्थान एवं उद्योग जगत मिलकर कौशल विकास

कार्यक्रमों को प्रभावी ढंग से लागू करें। अंततः कहा जा सकता है कि कौशल आधारित शिक्षा वर्तमान समय की आवश्यकता है। यह शिक्षा युवाओं को केवल शिक्षित ही नहीं, बल्कि सक्षम, आत्मनिर्भर और रोजगारपरक बनाती है। आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में कौशल आधारित शिक्षा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यही शिक्षा राष्ट्र के मानव संसाधन को उत्पादक एवं सशक्त बनाने का आधार प्रदान करती है।

2. डिजिटल शिक्षा

वर्तमान युग विज्ञान और तकनीक का युग है, जहाँ शिक्षा के क्षेत्र में भी डिजिटल क्रांति ने महत्वपूर्ण परिवर्तन किए हैं। डिजिटल शिक्षा के अंतर्गत ऑनलाइन कक्षाएँ, स्मार्ट क्लास, ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म, वर्चुअल लर्निंग, मोबाइल एप्स, डिजिटल पुस्तकालय तथा इंटरनेट आधारित शिक्षण सामग्री का उपयोग किया जाता है। इससे शिक्षा अधिक सुलभ, सरल और प्रभावी बनी है।

कोविड-19 महामारी के दौरान जब विद्यालय एवं विश्वविद्यालय बंद हो गए थे, तब डिजिटल शिक्षा ने शिक्षण प्रक्रिया को निरंतर बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। शिक्षक और विद्यार्थी ऑनलाइन माध्यमों जैसे Zoom, Google Meet, DIKSHA Portal, SWAYAM तथा अन्य डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से जुड़े रहे हैं। इससे यह स्पष्ट हुआ कि डिजिटल शिक्षा भविष्य की शिक्षा व्यवस्था का महत्वपूर्ण आधार बन चुकी है। डिजिटल शिक्षा का सबसे बड़ा लाभ यह है कि विद्यार्थी किसी भी स्थान और समय पर शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। ग्रामीण एवं दूरस्थ क्षेत्रों के विद्यार्थियों को भी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिल रहा है। इसके अतिरिक्त, ऑडियो-वीडियो सामग्री, एनिमेशन और स्मार्ट तकनीकों के प्रयोग से शिक्षा अधिक रोचक एवं प्रभावशाली बनती है। हालाँकि, इंटरनेट की कमी, डिजिटल उपकरणों का अभाव तथा तकनीकी ज्ञान की कमी जैसी चुनौतियाँ अभी भी मौजूद हैं, जिन्हें दूर करना आवश्यक है।

3. रोजगारपरक शिक्षा

वर्तमान समय में शिक्षा का उद्देश्य केवल डिग्री प्रदान करना नहीं, बल्कि युवाओं को रोजगार के योग्य बनाना भी है। इसलिए आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में तकनीकी, व्यावसायिक तथा व्यावहारिक शिक्षा को विशेष महत्व दिया जा रहा है। रोजगारपरक शिक्षा विद्यार्थियों को ऐसे कौशल प्रदान करती है, जिनकी आवश्यकता उद्योगों, व्यापार, सेवा क्षेत्र तथा तकनीकी क्षेत्रों में होती है।

नई शिक्षा नीति 2020 में भी व्यावसायिक शिक्षा और कौशल विकास पर विशेष बल दिया गया है। कंप्यूटर शिक्षा, डिजिटल मार्केटिंग, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), कृषि तकनीक, इलेक्ट्रॉनिक्स, फैशन डिजाइनिंग, होटल प्रबंधन, स्वास्थ्य सेवाएँ तथा अन्य तकनीकी पाठ्यक्रम युवाओं को रोजगार एवं स्वरोजगार के अवसर प्रदान कर रहे हैं।

रोजगारपरक शिक्षा बेरोजगारी की समस्या को कम करने में सहायक होती है। यह युवाओं को आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा देती है तथा उन्हें नौकरी पाने के साथ-साथ रोजगार उत्पन्न करने योग्य भी बनाती है। इस प्रकार यह शिक्षा आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

4. समावेशी शिक्षा

समावेशी शिक्षा का उद्देश्य समाज के प्रत्येक वर्ग तक शिक्षा पहुँचाना है, ताकि कोई भी व्यक्ति शिक्षा से वंचित न रहे। इसमें महिलाओं, दिव्यांग व्यक्तियों, ग्रामीण विद्यार्थियों, आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों, अनुसूचित जाति एवं जनजाति तथा अन्य पिछड़े वर्गों को समान शैक्षिक अवसर प्रदान करने पर बल दिया जाता है।

समावेशी शिक्षा सामाजिक समानता और न्याय की भावना को मजबूत करती है। सरकार द्वारा छात्रवृत्ति योजनाएँ, निःशुल्क शिक्षा, मध्याह्न भोजन योजना, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ अभियान तथा दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए विशेष सुविधाएँ प्रदान की जा रही हैं, जिससे शिक्षा का प्रसार व्यापक स्तर पर हो सके।

इस प्रकार की शिक्षा सामाजिक भेदभाव को कम करती है तथा सभी वर्गों के लोगों को आत्मनिर्भर बनने का अवसर प्रदान करती है। जब समाज का प्रत्येक व्यक्ति शिक्षित होगा, तभी वास्तविक अर्थों में समतामूलक और सशक्त भारत का निर्माण संभव होगा।

5. अनुसंधान और नवाचार

किसी भी राष्ट्र की प्रगति अनुसंधान और नवाचार पर निर्भर करती है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में उच्च शिक्षा संस्थानों, विश्वविद्यालयों तथा तकनीकी संस्थानों में शोध कार्य, वैज्ञानिक अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावा दिया जा रहा है।

नई शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत अनुसंधान संस्कृति को मजबूत करने के लिए “नेशनल रिसर्च फाउंडेशन (NRF)” की स्थापना का प्रस्ताव किया गया है। इसके अतिरिक्त, स्टार्टअप संस्कृति, इनक्यूबेशन सेंटर तथा नवाचार प्रयोगशालाओं के माध्यम से विद्यार्थियों को नए विचार विकसित करने और उद्यमिता की दिशा में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया जा रहा है।

अनुसंधान और नवाचार से नई तकनीकों, उत्पादों और सेवाओं का विकास होता है, जिससे देश आर्थिक और वैज्ञानिक रूप से मजबूत बनता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, अंतरिक्ष विज्ञान, चिकित्सा, कृषि तकनीक तथा डिजिटल तकनीक जैसे क्षेत्रों में भारत की बढ़ती उपलब्धियाँ शिक्षा और अनुसंधान की ही देन हैं।

6. बहुभाषिक शिक्षा

भारत एक बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक देश है। इसलिए नई शिक्षा नीति 2020 में मातृभाषा और भारतीय भाषाओं में शिक्षा प्रदान करने पर विशेष बल दिया गया है। शोधों से यह सिद्ध हुआ है कि विद्यार्थी अपनी मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त करने पर विषयों को अधिक आसानी से समझ पाते हैं।

बहुभाषिक शिक्षा विद्यार्थियों की अभिव्यक्ति क्षमता, समझ तथा रचनात्मकता को विकसित करती है। इससे शिक्षा अधिक सहज, प्रभावी और विद्यार्थीकेंद्रित बनती है। भारतीय भाषाओं को बढ़ावा देने से देश की सांस्कृतिक विरासत और भाषाई विविधता भी सुरक्षित रहती है।

इसके अतिरिक्त, मातृभाषा में शिक्षा ग्रामीण एवं कमजोर वर्गों के विद्यार्थियों के लिए विशेष रूप से लाभकारी होती है, क्योंकि वे अपनी भाषा में बेहतर ढंग से सीख और समझ सकते हैं। इस प्रकार बहुभाषिक शिक्षा, शिक्षा के लोकतंत्रीकरण और समावेशी विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

आत्मनिर्भर भारत में शिक्षा की भूमिका:

“आत्मनिर्भर भारत” का अर्थ केवल आर्थिक रूप से स्वावलंबी राष्ट्र बनाना नहीं है, बल्कि ऐसा भारत निर्मित करना है जो ज्ञान, विज्ञान, तकनीक, संस्कृति, कौशल, नवाचार तथा मानवीय मूल्यों के आधार पर स्वयं को सशक्त बना सके। इस लक्ष्य की प्राप्ति में शिक्षा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और आधारभूत है। शिक्षा किसी भी राष्ट्र की प्रगति का प्रमुख साधन होती है, क्योंकि वही समाज को जागरूक, कुशल, वैज्ञानिक तथा आत्मविश्वासी बनाती है। एक सशक्त शिक्षा व्यवस्था ही राष्ट्र को आत्मनिर्भरता की दिशा में अग्रसर कर सकती है।

1. कौशल विकास और रोजगार

वर्तमान समय में केवल सैद्धांतिक ज्ञान पर्याप्त नहीं माना जाता, बल्कि व्यावहारिक एवं तकनीकी कौशल की आवश्यकता भी अत्यधिक बढ़ गई है। शिक्षा युवाओं में तकनीकी, व्यावसायिक तथा उद्यमिता संबंधी कौशल विकसित करती है, जिससे वे रोजगार प्राप्त करने के साथ-साथ स्वरोजगार के अवसर भी उत्पन्न कर सकते हैं।

कौशल आधारित शिक्षा विद्यार्थियों को उद्योगों, व्यापार, कृषि, सूचना प्रौद्योगिकी, डिजिटल सेवाओं तथा अन्य व्यावसायिक क्षेत्रों के लिए तैयार करती है। “स्किल इंडिया मिशन”, “प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना” तथा नई शिक्षा नीति 2020 के माध्यम से युवाओं को रोजगारपरक शिक्षा प्रदान करने पर विशेष बल दिया जा रहा है। इससे बेरोजगारी कम होगी और युवा आत्मनिर्भर बन सकेंगे।

2. वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास

शिक्षा व्यक्ति में वैज्ञानिक सोच, तार्किकता, अनुसंधान प्रवृत्ति तथा नवाचार की भावना विकसित करती है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण समाज को अंधविश्वास, रूढ़ियों और अवैज्ञानिक मान्यताओं से मुक्त करता है।

जब विद्यार्थी विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में शिक्षित होते हैं, तब वे नए आविष्कार, अनुसंधान और तकनीकी विकास में योगदान देते हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), रोबोटिक्स, डिजिटल तकनीक, अंतरिक्ष विज्ञान तथा जैव प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में प्रगति आत्मनिर्भर भारत की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं। शिक्षा के माध्यम से भारत विज्ञान और तकनीकी क्षेत्र में विश्व स्तर पर अपनी पहचान मजबूत कर सकता है।

3. सामाजिक समानता और सशक्तिकरण

शिक्षा सामाजिक असमानताओं को दूर करने का सबसे प्रभावी माध्यम है। यह समाज के सभी वर्गों—विशेषकर गरीब, पिछड़े, दलित, आदिवासी तथा महिलाओं—को समान अवसर प्रदान करती है।

शिक्षा के माध्यम से वंचित वर्ग अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होते हैं और सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक रूप से सशक्त बनते हैं। डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने भी शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन और समानता का सबसे बड़ा हथियार माना था। जब समाज का प्रत्येक व्यक्ति शिक्षित होगा, तभी वास्तविक अर्थों में आत्मनिर्भर और समतामूलक भारत का निर्माण संभव होगा।

4. आर्थिक विकास में योगदान

किसी भी राष्ट्र की आर्थिक प्रगति उसके मानव संसाधनों की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। शिक्षित और कुशल नागरिक उत्पादन क्षमता को बढ़ाते हैं तथा उद्योग, व्यापार और सेवा क्षेत्रों में नवाचार को प्रोत्साहित करते हैं।

शिक्षा के माध्यम से प्रशिक्षित मानव संसाधन देश की उत्पादन प्रणाली को मजबूत बनाते हैं, जिससे आर्थिक विकास को गति मिलती है। आधुनिक शिक्षा उद्यमिता को भी बढ़ावा देती है, जिसके परिणामस्वरूप नए स्टार्टअप, छोटे उद्योग और स्वरोजगार के अवसर विकसित होते हैं। इससे भारत विदेशी संसाधनों पर निर्भरता कम करके आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था की ओर अग्रसर हो सकता है।

5. लोकतांत्रिक चेतना का विकास

शिक्षा नागरिकों को उनके अधिकारों, कर्तव्यों और संवैधानिक मूल्यों के प्रति जागरूक बनाती है। यह लोकतंत्र, समानता, स्वतंत्रता, न्याय और बंधुत्व जैसे मूल्यों को मजबूत करती है।

एक शिक्षित नागरिक समाज और राष्ट्र के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को बेहतर ढंग से समझता है तथा लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में सक्रिय भागीदारी निभाता है। शिक्षा राष्ट्रीय एकता, सामाजिक सद्भाव और नैतिक मूल्यों को भी सुदृढ़ करती है। इस प्रकार शिक्षा लोकतंत्र को मजबूत बनाकर आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

6. आत्मविश्वास और स्वावलंबन का विकास

शिक्षा व्यक्ति के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करती है। यह व्यक्ति में आत्मविश्वास, आत्मसम्मान, निर्णय क्षमता और नेतृत्व कौशल का विकास करती है। शिक्षित व्यक्ति अपने जीवन की समस्याओं का समाधान स्वयं करने में सक्षम बनता है और दूसरों पर निर्भरता कम करता है।

जब व्यक्ति आत्मनिर्भर बनता है, तभी समाज और राष्ट्र भी आत्मनिर्भर बन सकते हैं। शिक्षा युवाओं में “मैं कर सकता हूँ” की भावना विकसित करती है, जो आत्मनिर्भर भारत की मूल भावना है।

7. राष्ट्रीय विकास और नवाचार को बढ़ावा: शिक्षा अनुसंधान, नवाचार और रचनात्मकता को प्रोत्साहित करती है। आधुनिक शिक्षा व्यवस्था

विद्यार्थियों को केवल ज्ञान प्राप्त करने तक सीमित नहीं रखती, बल्कि उन्हें नई खोज और समस्याओं के समाधान के लिए प्रेरित करती है।

स्टार्टअप संस्कृति, डिजिटल इंडिया, मेक इन इंडिया तथा आत्मनिर्भर भारत अभियान जैसे कार्यक्रम शिक्षा और नवाचार से ही सफल हो सकते हैं। यदि देश के युवा अनुसंधान और तकनीकी विकास में आगे बढ़ेंगे, तो भारत वैश्विक स्तर पर आत्मनिर्भर और प्रतिस्पर्धी राष्ट्र बन सकेगा।

अंततः कहा जा सकता है कि शिक्षा आत्मनिर्भर भारत की आधारशिला है। यह केवल ज्ञान प्रदान करने का माध्यम नहीं, बल्कि व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के सर्वांगीण विकास का शक्तिशाली साधन है। शिक्षा के माध्यम से ही कुशल मानव संसाधन, वैज्ञानिक सोच, सामाजिक समानता, आर्थिक प्रगति और लोकतांत्रिक चेतना का विकास संभव है। इसलिए आवश्यक है कि शिक्षा को अधिक समावेशी, गुणवत्तापूर्ण, रोजगारपरक और तकनीकी रूप से उन्नत बनाया जाए, ताकि भारत वास्तविक अर्थों में आत्मनिर्भर, सशक्त और विकसित राष्ट्र बन सके।

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की चुनौतियाँ:

यद्यपि वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में अनेक सुधार और परिवर्तन हुए हैं, फिर भी भारतीय शिक्षा प्रणाली कई गंभीर चुनौतियों का सामना कर रही है। वैश्वीकरण, तकनीकी विकास और बदलती सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों के कारण शिक्षा के क्षेत्र में नई आवश्यकताएँ उत्पन्न हुई हैं। इन आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षा व्यवस्था को पूर्ण रूप से विकसित करना अभी भी एक बड़ी चुनौती है। निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से इन चुनौतियों को विस्तार से समझा जा सकता है—

1. शिक्षा में असमानता

भारत में शिक्षा के क्षेत्र में ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच स्पष्ट असमानता दिखाई देती है। महानगरों और निजी विद्यालयों में आधुनिक सुविधाएँ, प्रशिक्षित शिक्षक, डिजिटल संसाधन तथा गुणवत्तापूर्ण शिक्षण उपलब्ध हैं, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों के अनेक विद्यालय अभी भी मूलभूत सुविधाओं जैसे भवन, पुस्तकालय, प्रयोगशाला, बिजली और पर्याप्त शिक्षकों की कमी से जूझ रहे हैं।

आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के बच्चों को भी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। कई परिवार आर्थिक समस्याओं के कारण बच्चों को उच्च शिक्षा नहीं दिला पाते, जिसके परिणामस्वरूप वे शिक्षा से वंचित रह जाते हैं। यह असमानता सामाजिक और आर्थिक विषमता को और बढ़ाती है।

2. बेरोजगारी की समस्या

शिक्षित युवाओं में बढ़ती बेरोजगारी वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की एक गंभीर चुनौती है। आज बड़ी संख्या में विद्यार्थी डिग्री प्राप्त कर रहे हैं, लेकिन उनमें रोजगार के लिए आवश्यक व्यावहारिक कौशल और तकनीकी दक्षता का अभाव पाया जाता है।

इसका मुख्य कारण शिक्षा और रोजगार के बीच समुचित समन्वय का अभाव है। कई पाठ्यक्रम आज भी पारंपरिक एवं सैद्धांतिक हैं, जो आधुनिक उद्योगों और बाजार की आवश्यकताओं के अनुरूप नहीं हैं। परिणामस्वरूप शिक्षित युवा नौकरी प्राप्त करने में कठिनाई महसूस करते हैं। इसलिए शिक्षा को अधिक कौशल आधारित, तकनीकी और रोजगारपरक बनाने की आवश्यकता है।

3. व्यावहारिक शिक्षा का अभाव

भारतीय शिक्षा व्यवस्था में आज भी रटने की प्रवृत्ति अधिक देखने को मिलती है। अधिकांश विद्यालयों और महाविद्यालयों में परीक्षा केंद्रित शिक्षा पर अधिक ध्यान दिया जाता है, जबकि व्यावहारिक ज्ञान, प्रयोगात्मक शिक्षण और समस्या समाधान क्षमता के विकास पर अपेक्षाकृत कम बल दिया जाता है।

विद्यार्थी अक्सर केवल अंक प्राप्त करने के उद्देश्य से अध्ययन करते हैं, जिससे उनकी रचनात्मकता, नवाचार क्षमता और तार्किक सोच प्रभावित होती है। प्रयोगशालाओं, परियोजना कार्यों, कौशल प्रशिक्षण तथा अनुभवात्मक शिक्षण की कमी के कारण विद्यार्थी वास्तविक जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए पूर्ण रूप से तैयार नहीं हो पाते।

4. डिजिटल विभाजन

डिजिटल शिक्षा के विस्तार के बावजूद देश में “डिजिटल विभाजन” एक बड़ी समस्या बनी हुई है। शहरी क्षेत्रों में जहाँ इंटरनेट, स्मार्टफोन, कंप्यूटर और अन्य तकनीकी संसाधन आसानी से उपलब्ध हैं, वहीं ग्रामीण और दूरस्थ क्षेत्रों में आज भी इन सुविधाओं का अभाव है।

कोविड-19 महामारी के दौरान यह समस्या और अधिक स्पष्ट रूप से सामने आई, जब अनेक विद्यार्थी ऑनलाइन शिक्षा से वंचित रह गए। इंटरनेट की धीमी गति, बिजली की समस्या तथा आर्थिक संसाधनों की कमी के कारण लाखों विद्यार्थी डिजिटल शिक्षा का लाभ नहीं उठा सके। यह स्थिति शिक्षा में असमानता को और बढ़ाती है। इसलिए डिजिटल सुविधाओं का समान वितरण और तकनीकी साक्षरता का विकास अत्यंत आवश्यक है।

5. नैतिक मूल्यों का हास

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में नैतिक शिक्षा, मानवीय मूल्यों और चरित्र निर्माण पर अपेक्षाकृत कम ध्यान दिया जा रहा है। शिक्षा का मुख्य केंद्र अब अधिकतर परीक्षा, अंक और रोजगार तक सीमित होता जा रहा है, जिसके कारण विद्यार्थियों में अनुशासन, सहिष्णुता, करुणा, ईमानदारी और सामाजिक जिम्मेदारी जैसे मूल्यों का हास देखने को मिलता है।

समाज में बढ़ती हिंसा, भ्रष्टाचार, असहिष्णुता और सामाजिक तनाव कहीं न कहीं नैतिक शिक्षा की कमी को भी दर्शाते हैं। इसलिए शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास नहीं, बल्कि नैतिक एवं मानवीय विकास भी होना चाहिए। विद्यालयों और उच्च शिक्षा संस्थानों में मूल्यपरक शिक्षा को पुनः मजबूत करने की आवश्यकता है।

6. अनुसंधान और नवाचार की कमी

उच्च शिक्षा संस्थानों में अनुसंधान और नवाचार की गति अभी भी अपेक्षाकृत धीमी है। विश्व के विकसित देशों की तुलना में भारत में शोध कार्यों पर कम निवेश किया जाता है तथा आधुनिक अनुसंधान सुविधाओं की भी कमी देखी जाती है।

कई विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में शोध कार्य केवल औपचारिकता तक सीमित रह जाते हैं। विद्यार्थियों और शिक्षकों को पर्याप्त संसाधन, प्रयोगशालाएँ, शोध अनुदान तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर के अवसर नहीं मिल पाते। इसके कारण विज्ञान, तकनीक, चिकित्सा और अन्य क्षेत्रों में अपेक्षित नवाचार की गति धीमी रहती है।

यदि भारत को वैश्विक स्तर पर आत्मनिर्भर और प्रतिस्पर्धी राष्ट्र बनाना है, तो अनुसंधान संस्कृति को मजबूत करना अत्यंत आवश्यक है। इसके लिए शिक्षा संस्थानों में शोध, नवाचार, स्टार्टअप और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को अधिक प्रोत्साहन देना होगा।

अंततः कहा जा सकता है कि वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में अनेक सकारात्मक परिवर्तन होने के बावजूद कई चुनौतियाँ अभी भी विद्यमान हैं। शिक्षा में असमानता, बेरोजगारी, व्यावहारिक ज्ञान की कमी, डिजिटल विभाजन, नैतिक मूल्यों का हास तथा अनुसंधान की धीमी गति जैसी समस्याएँ शिक्षा की गुणवत्ता और प्रभावशीलता को प्रभावित करती हैं। इन चुनौतियों का समाधान सरकार, शिक्षण संस्थानों, शिक्षकों, अभिभावकों तथा समाज के संयुक्त प्रयासों से ही संभव है। यदि शिक्षा को अधिक समावेशी, व्यावहारिक, नैतिक और तकनीकी रूप से सशक्त बनाया जाए, तो भारत आत्मनिर्भर और विकसित राष्ट्र बनने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ सकता है।

नई शिक्षा नीति 2020 और आत्मनिर्भर भारत:

भारत सरकार द्वारा प्रस्तुत नई शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा व्यवस्था में व्यापक और सकारात्मक परिवर्तन लाने का एक महत्वपूर्ण प्रयास है। लगभग तीन दशकों के बाद लागू की गई यह नीति शिक्षा को अधिक समग्र, बहुआयामी, व्यावहारिक, कौशल आधारित तथा विद्यार्थीकेंद्रित बनाने पर बल देती है। इसका प्रमुख उद्देश्य केवल डिग्री प्रदान करना नहीं, बल्कि ऐसे सक्षम, रचनात्मक और आत्मनिर्भर नागरिक तैयार करना है जो राष्ट्र निर्माण में सक्रिय योगदान दे सकें।

नई शिक्षा नीति 2020 आत्मनिर्भर भारत अभियान की मूल भावना के अनुरूप शिक्षा को रोजगारपरक, तकनीकी और नवाचार आधारित बनाने का प्रयास करती है। यह नीति विद्यार्थियों में कौशल, अनुसंधान, रचनात्मकता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और उद्यमिता की भावना विकसित करने पर विशेष बल देती है, जिससे वे केवल नौकरी खोजने वाले नहीं, बल्कि रोजगार उत्पन्न करने वाले भी बन सकें।

नई शिक्षा नीति 2020 की प्रमुख विशेषताएँ:

1. मातृभाषा में शिक्षा पर बल

नई शिक्षा नीति में प्रारंभिक स्तर पर मातृभाषा एवं स्थानीय भाषाओं में शिक्षा प्रदान करने पर विशेष जोर दिया गया है। शोधों से यह सिद्ध हुआ है कि विद्यार्थी अपनी मातृभाषा में विषयों को अधिक आसानी से समझ पाते हैं।

मातृभाषा में शिक्षा देने से बच्चों की समझ, अभिव्यक्ति क्षमता और रचनात्मकता का विकास बेहतर ढंग से होता है। इससे शिक्षा अधिक सहज, प्रभावी और समावेशी बनती है। साथ ही भारतीय भाषाओं और सांस्कृतिक विरासत को भी संरक्षण मिलता है।

2. कौशल विकास और व्यावसायिक शिक्षा

नई शिक्षा नीति में विद्यालय स्तर से ही कौशल विकास और व्यावसायिक शिक्षा को जोड़ने पर बल दिया गया है। विद्यार्थियों को तकनीकी एवं व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान करके उन्हें रोजगार एवं स्वरोजगार के लिए तैयार किया जा रहा है।

कंप्यूटर शिक्षा, कोडिंग, डिजिटल तकनीक, कृषि, हस्तशिल्प, इलेक्ट्रॉनिक्स तथा अन्य व्यावसायिक पाठ्यक्रमों को शिक्षा प्रणाली में शामिल किया गया है। इससे विद्यार्थी केवल सैद्धांतिक ज्ञान तक सीमित नहीं रहेंगे, बल्कि वास्तविक जीवन और कार्यक्षेत्र के लिए भी सक्षम बनेंगे।

3. बहुविषयक शिक्षा प्रणाली

नई शिक्षा नीति का एक महत्वपूर्ण पहलू बहुविषयक शिक्षा प्रणाली (Multidisciplinary Education) है। इसके अंतर्गत विद्यार्थी अपनी रुचि और आवश्यकता के अनुसार विभिन्न विषयों का चयन कर सकते हैं।

उदाहरण के लिए, विज्ञान का विद्यार्थी संगीत या कला का अध्ययन भी कर सकता है। इससे विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास होता है तथा उनकी रचनात्मकता और सोच का दायरा विस्तृत होता है। यह प्रणाली विद्यार्थियों को अधिक लचीला और बहुआयामी बनाती है।

4. डिजिटल शिक्षा को बढ़ावा

नई शिक्षा नीति में डिजिटल शिक्षा और तकनीकी संसाधनों के उपयोग को विशेष महत्व दिया गया है। ई-लर्निंग, ऑनलाइन शिक्षा, वर्चुअल कक्षाएँ, डिजिटल पुस्तकालय और स्मार्ट क्लास जैसी व्यवस्थाओं को प्रोत्साहित किया जा रहा है।

कोविड-19 महामारी के दौरान डिजिटल शिक्षा की उपयोगिता स्पष्ट रूप से सामने आई। नई शिक्षा नीति का उद्देश्य शिक्षा को तकनीक से जोड़कर अधिक सुलभ, आधुनिक और प्रभावी बनाना है। इससे दूरस्थ एवं ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों को भी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिलेगा।

5. अनुसंधान और नवाचार को प्रोत्साहन

नई शिक्षा नीति में अनुसंधान और नवाचार को विशेष महत्व दिया गया है। इसके लिए “नेशनल रिसर्च फाउंडेशन (NRF)” की स्थापना का प्रस्ताव किया गया है, ताकि उच्च शिक्षा संस्थानों में शोध संस्कृति को मजबूत किया जा सके।

विद्यार्थियों को नई खोज, वैज्ञानिक अनुसंधान, स्टार्टअप और नवाचार की दिशा में प्रेरित किया जा रहा है। इससे भारत विज्ञान, तकनीक और उद्योग के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनने की दिशा में आगे बढ़ सकेगा।

6. समग्र विकास पर बल: नई शिक्षा नीति केवल बौद्धिक विकास तक सीमित नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों के शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, नैतिक और सामाजिक विकास पर भी बल देती है।

खेल, कला, संगीत, योग, नैतिक शिक्षा और जीवन कौशल को भी शिक्षा का महत्वपूर्ण भाग बनाया गया है। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों का संतुलित एवं सर्वांगीण व्यक्तित्व विकसित करना है।

7. आलोचनात्मक चिंतन और रचनात्मकता का विकास

नई शिक्षा नीति में रटने की प्रवृत्ति को कम करके आलोचनात्मक चिंतन (Critical Thinking), समस्या समाधान क्षमता तथा रचनात्मकता के विकास पर विशेष बल दिया गया है।

विद्यार्थियों को प्रश्न पूछने, नए विचार विकसित करने और व्यावहारिक समाधान खोजने के लिए प्रेरित किया जाएगा। इससे उनमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण और नवाचार की भावना विकसित होगी, जो आत्मनिर्भर भारत के निर्माण के लिए अत्यंत आवश्यक है।

अतः नई शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा व्यवस्था को आधुनिक, समावेशी, कौशल आधारित और रोजगारपरक बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह नीति विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर, रचनात्मक और उद्यमशील बनाने का प्रयास करती है। यदि इस नीति को प्रभावी रूप से लागू किया जाए, तो यह आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

शिक्षा और तकनीकी विकास:

वर्तमान युग विज्ञान और तकनीक का युग है। तकनीकी विकास ने मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया है और शिक्षा भी इससे अछूती नहीं रही। आधुनिक तकनीकों ने शिक्षा व्यवस्था में क्रांतिकारी परिवर्तन किए हैं, जिसके कारण शिक्षण और अधिगम की प्रक्रिया अधिक सरल, प्रभावी और व्यापक बन गई है।

आज स्मार्टफोन, इंटरनेट, कंप्यूटर, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), क्लाउड तकनीक, डिजिटल प्लेटफॉर्म तथा वर्चुअल लर्निंग जैसी तकनीकों ने शिक्षा को नई दिशा प्रदान की है। विद्यार्थी अब केवल कक्षा तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे घर बैठे ऑनलाइन माध्यमों से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

डिजिटल शिक्षा का विस्तार:

ई-लर्निंग, ऑनलाइन कोर्स, वर्चुअल क्लासरूम, स्मार्ट क्लास और डिजिटल पुस्तकालयों ने शिक्षा को अधिक सुलभ और लचीला बना दिया है। SWAYAM, DIKSHA, e-Pathshala तथा अन्य ऑनलाइन प्लेटफॉर्म विद्यार्थियों को विभिन्न विषयों की अध्ययन सामग्री उपलब्ध करा रहे हैं। तकनीकी संसाधनों के माध्यम से विद्यार्थी अपनी गति और सुविधा के अनुसार अध्ययन कर सकते हैं। ऑडियो-वीडियो सामग्री, एनिमेशन, प्रेजेंटेशन तथा स्मार्ट शिक्षण विधियाँ शिक्षा को अधिक रोचक और प्रभावशाली बनाती हैं।

तकनीकी शिक्षा और रोजगार

तकनीकी शिक्षा युवाओं को आधुनिक उद्योगों और रोजगार की आवश्यकताओं के अनुरूप तैयार करती है। कंप्यूटर शिक्षा, प्रोग्रामिंग, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, रोबोटिक्स, डेटा साइंस, साइबर सुरक्षा तथा डिजिटल मार्केटिंग जैसे क्षेत्र आज रोजगार के प्रमुख स्रोत बन चुके हैं।

तकनीकी शिक्षा युवाओं में व्यावहारिक कौशल विकसित करती है, जिससे वे स्वरोजगार और उद्यमिता की दिशा में भी आगे बढ़ सकते हैं। इससे बेरोजगारी कम करने और आत्मनिर्भरता बढ़ाने में सहायता मिलती है।

आत्मनिर्भर भारत में तकनीकी शिक्षा का महत्व:

वर्तमान विश्व अर्थव्यवस्था, ज्ञान और तकनीक पर आधारित हो चुकी है। जो राष्ट्र विज्ञान और तकनीक में आगे हैं वही आर्थिक और वैश्विक स्तर पर अधिक शक्तिशाली हैं। इसलिए भारत के लिए भी तकनीकी शिक्षा अत्यंत आवश्यक है।

तकनीकी शिक्षा के माध्यम से भारत डिजिटल इंडिया, मेक इन इंडिया, स्टार्टअप इंडिया तथा आत्मनिर्भर भारत जैसे अभियानों को सफल बना सकता है। यदि देश के युवा तकनीकी रूप से दक्ष और नवाचारी बनेंगे, तो भारत वैश्विक स्तर पर आत्मनिर्भर और प्रतिस्पर्धी राष्ट्र के रूप में उभर सकेगा।

अतः कहा जा सकता है कि शिक्षा और तकनीकी विकास एक-दूसरे के पूरक हैं। तकनीकी विकास ने शिक्षा को आधुनिक, सुलभ और प्रभावी बनाया है, जबकि शिक्षा तकनीकी प्रगति के लिए योग्य मानव संसाधन तैयार करती है। आत्मनिर्भर भारत के निर्माण के लिए आवश्यक है कि शिक्षा को तकनीकी नवाचार, डिजिटल संसाधनों और कौशल विकास से जोड़ा जाए, ताकि भारत ज्ञान आधारित और आत्मनिर्भर राष्ट्र बन सके।

सुझाव:

आत्मनिर्भर भारत के निर्माण के लिए आवश्यक है कि शिक्षा व्यवस्था को समय की आवश्यकताओं, तकनीकी विकास तथा सामाजिक परिवर्तन के अनुरूप अधिक प्रभावी, समावेशी और रोजगारपरक बनाया जाए। केवल सैद्धांतिक ज्ञान प्रदान करना पर्याप्त नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों को व्यावहारिक, नैतिक तथा तकनीकी रूप से सक्षम बनाना भी आवश्यक है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु निम्नलिखित सुधारों पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए—

1. शिक्षा को अधिक व्यावहारिक और रोजगारपरक बनाया जाए

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में सैद्धांतिक ज्ञान के साथ-साथ व्यावहारिक एवं कौशल आधारित शिक्षा को अधिक महत्व दिया जाना चाहिए। पाठ्यक्रमों को उद्योगों, तकनीकी क्षेत्रों तथा आधुनिक रोजगार की आवश्यकताओं के अनुरूप तैयार किया जाए।

विद्यालयों और महाविद्यालयों में प्रयोगात्मक शिक्षण, परियोजना कार्य, इंटरशिप, प्रशिक्षण तथा उद्यमिता शिक्षा को बढ़ावा दिया जाए, ताकि विद्यार्थी केवल डिग्रीधारी न बनें, बल्कि रोजगार प्राप्त करने और स्वरोजगार स्थापित करने में भी सक्षम हो सकें।

2. ग्रामीण क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की व्यवस्था की जाए

ग्रामीण और दूरस्थ क्षेत्रों में आज भी शिक्षा की गुणवत्ता शहरी क्षेत्रों की तुलना में अपेक्षाकृत कमजोर है। अनेक विद्यालयों में प्रशिक्षित शिक्षकों, पुस्तकालयों, प्रयोगशालाओं, बिजली, इंटरनेट और अन्य बुनियादी सुविधाओं का अभाव है।

सरकार को ग्रामीण विद्यालयों में आधुनिक संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित करनी चाहिए। योग्य शिक्षकों की नियुक्ति, डिजिटल सुविधाओं का विस्तार तथा स्थानीय आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षा व्यवस्था विकसित करने से ग्रामीण विद्यार्थियों को भी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त हो सकेगी।

3. डिजिटल शिक्षा के लिए इंटरनेट और तकनीकी संसाधनों का विस्तार किया जाए

वर्तमान समय में डिजिटल शिक्षा अत्यंत आवश्यक हो चुकी है। इसलिए देश के सभी क्षेत्रों, विशेषकर ग्रामीण और पिछड़े इलाकों में इंटरनेट, स्मार्ट उपकरणों और तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित की जानी चाहिए।

डिजिटल साक्षरता कार्यक्रमों के माध्यम से विद्यार्थियों और शिक्षकों को तकनीकी ज्ञान प्रदान किया जाए। इससे ऑनलाइन शिक्षा, ई-लर्निंग और डिजिटल प्लेटफॉर्म का लाभ समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुंच सकेगा तथा डिजिटल विभाजन की समस्या कम होगी।

4. कौशल विकास और व्यावसायिक शिक्षा को विद्यालय स्तर से ही लागू किया जाए

विद्यार्थियों में प्रारंभिक स्तर से ही कौशल विकास और व्यावसायिक शिक्षा को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। कंप्यूटर शिक्षा, कृषि, हस्तशिल्प, तकनीकी प्रशिक्षण, कोडिंग, इलेक्ट्रॉनिक्स तथा अन्य रोजगारपरक पाठ्यक्रमों को विद्यालय स्तर से ही शिक्षा का हिस्सा बनाया जाए।

इससे विद्यार्थियों में आत्मनिर्भरता, कार्यकुशलता और उद्यमिता की भावना विकसित होगी। वे भविष्य में नौकरी प्राप्त करने के साथ-साथ स्वरोजगार के अवसर भी उत्पन्न कर सकेंगे।

5. अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावा दिया जाए

यदि भारत को वैश्विक स्तर पर आत्मनिर्भर और विकसित राष्ट्र बनाना है, तो अनुसंधान और नवाचार को विशेष महत्व देना होगा। विश्वविद्यालयों और उच्च शिक्षा संस्थानों में आधुनिक प्रयोगशालाएँ, शोध केंद्र तथा नवाचार प्रयोगशालाएँ स्थापित की जानी चाहिए। विद्यार्थियों और शिक्षकों को शोध

कार्यों, वैज्ञानिक परियोजनाओं और स्टार्टअप गतिविधियों के लिए प्रोत्साहित किया जाए। इससे विज्ञान, तकनीक, कृषि, चिकित्सा तथा उद्योग के क्षेत्रों में नई खोज और विकास को गति मिलेगी।

6. नैतिक शिक्षा और मानवीय मूल्यों को शिक्षा का अनिवार्य भाग बनाया जाए

शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास नहीं, बल्कि नैतिक एवं सामाजिक विकास भी होना चाहिए। वर्तमान समय में नैतिक मूल्यों के हास को देखते हुए विद्यालयों और महाविद्यालयों में नैतिक शिक्षा, चरित्र निर्माण, अनुशासन, सहिष्णुता, करुणा, ईमानदारी तथा सामाजिक जिम्मेदारी जैसे मूल्यों को विशेष महत्व दिया जाना चाहिए।

इससे विद्यार्थियों का व्यक्तित्व संतुलित एवं जिम्मेदार बनेगा तथा समाज में नैतिकता और सामाजिक सद्भाव को बढ़ावा मिलेगा।

7. शिक्षकों के प्रशिक्षण और गुणवत्ता पर विशेष ध्यान दिया जाए

शिक्षक शिक्षा व्यवस्था की सबसे महत्वपूर्ण कड़ी होते हैं। इसलिए शिक्षकों को आधुनिक शिक्षण तकनीकों, डिजिटल संसाधनों और नवीन शिक्षण विधियों का नियमित प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।

योग्य, प्रशिक्षित और प्रेरणादायक शिक्षक ही विद्यार्थियों का सही मार्गदर्शन कर सकते हैं। शिक्षकों की कार्यक्षमता और गुणवत्ता में सुधार से शिक्षा व्यवस्था की गुणवत्ता भी स्वतः बेहतर होगी।

8. शिक्षा में भारतीय संस्कृति, परंपरा और स्थानीय ज्ञान को उचित स्थान दिया जाए

भारतीय शिक्षा व्यवस्था में भारतीय संस्कृति, परंपरा, नैतिक मूल्यों, योग, आयुर्वेद, लोक ज्ञान तथा स्थानीय परंपराओं को उचित महत्व दिया जाना चाहिए। इससे विद्यार्थियों में अपनी सांस्कृतिक विरासत के प्रति सम्मान और राष्ट्रीय भावना का विकास होगा। स्थानीय ज्ञान और पारंपरिक तकनीकों को आधुनिक शिक्षा से जोड़ने से शिक्षा अधिक व्यवहारिक, उपयोगी और भारतीय जीवन मूल्यों के अनुरूप बन सकेगी।

उपसंहार:

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि शिक्षा किसी भी राष्ट्र की आत्मनिर्भरता का सबसे सशक्त और स्थायी आधार होती है। शिक्षा ही वह माध्यम है, जो व्यक्ति को ज्ञान, कौशल, नैतिकता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा आत्मविश्वास प्रदान करती है। एक शिक्षित, कुशल और जागरूक समाज ही किसी राष्ट्र को आर्थिक, सामाजिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक रूप से सशक्त बना सकता है।

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में अनेक सकारात्मक परिवर्तन हुए हैं। नई शिक्षा नीति 2020, डिजिटल शिक्षा, कौशल विकास, तकनीकी शिक्षा, अनुसंधान एवं नवाचार आधारित शिक्षण तथा समावेशी शिक्षा जैसी पहलें भारत को आत्मनिर्भरता की दिशा में आगे बढ़ा रही हैं। शिक्षा को अधिक रोजगारपरक, तकनीकी और व्यावहारिक बनाने के प्रयास युवाओं को आत्मनिर्भर और सक्षम बनाने में सहायक सिद्ध हो रहे हैं।

इसके बावजूद शिक्षा व्यवस्था के समक्ष अनेक चुनौतियाँ अभी भी विद्यमान हैं, जैसे—शिक्षा में असमानता, शिक्षित बेरोजगारी, डिजिटल विभाजन, व्यावहारिक ज्ञान की कमी, अनुसंधान की धीमी गति तथा नैतिक मूल्यों का हासा। यदि इन समस्याओं का समय रहते प्रभावी समाधान नहीं किया गया, तो आत्मनिर्भर भारत का लक्ष्य पूर्ण रूप से प्राप्त करना कठिन हो सकता है।

इसलिए आवश्यक है कि सरकार, शिक्षण संस्थान, शिक्षक, अभिभावक तथा समाज मिलकर शिक्षा व्यवस्था को अधिक समावेशी, आधुनिक, वैज्ञानिक, नैतिक और रोजगारपरक बनाने के लिए संयुक्त प्रयास करें। शिक्षा को केवल परीक्षा और डिग्री प्राप्त करने का माध्यम न मानकर व्यक्तित्व विकास, सामाजिक परिवर्तन और राष्ट्र निर्माण का सशक्त साधन बनाया जाना चाहिए। यदि भारत की शिक्षा व्यवस्था को कौशल विकास, तकनीकी नवाचार, अनुसंधान, नैतिक मूल्यों और भारतीय सांस्कृतिक आधारों से जोड़कर प्रभावी रूप से विकसित किया जाए, तो भारत न केवल आत्मनिर्भर राष्ट्र बनेगा, बल्कि विश्व स्तर पर ज्ञान, विज्ञान और मानवता के क्षेत्र में “विश्वगुरु” के रूप में भी अपनी विशिष्ट पहचान स्थापित कर सकेगा।

संदर्भ सूची (References)

1. Agarwal, P. (2006). Higher education in India: The need for change. *Indian Council for Research on International Economic Relations Journal*, 12(4), 45–60.
2. Aggarwal, J. C. (2014). *भारत में शिक्षा प्रणाली का विकास* (Development of Education System in India). नई दिल्ली: शिप्रा पब्लिकेशन्स।
3. Agrawal, S. P. (2001). *भारत में शिक्षा : अतीत, वर्तमान एवं भविष्य* (Education in India: Past, Present and Future). नई दिल्ली: कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कम्पनी।
4. Ambedkar, B. R. (1987). *डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर : राइटिंग्स एंड स्पीचेज* (Vol. 3). मुंबई: महाराष्ट्र शासन।
5. Bhattacharya, S. (2002). *भारतीय शिक्षा का इतिहास* नई दिल्ली: ओरिएंट ब्लैकस्वान।
6. Government of India. (2020). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* नई दिल्ली: शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार।
7. Kumar, A., & Singh, R. (2021). आत्मनिर्भर भारत और नई शिक्षा नीति 2020 का अध्ययन। *भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका*, 15(2), 34–42।
8. Kumar, K. (2005). *शिक्षा का राजनीतिक एजेंडा : औपनिवेशिक एवं राष्ट्रवादी विचारों का अध्ययन* नई दिल्ली: सेज पब्लिकेशन्स।
9. MHRD. (2020). *National Education Policy 2020*. New Delhi: Ministry of Human Resource Development, Government of India.
10. Mishra, S. (2022). डिजिटल शिक्षा और आत्मनिर्भर भारत की अवधारणा। *International Journal of Creative Research Thoughts*, 10(5), 112–118।
11. NCERT. (2006). *सामाजिक विज्ञान शिक्षण हेतु राष्ट्रीय फोकस समूह स्थिति पत्र* नई दिल्ली: एनसीईआरटी।
12. Nehru, J. (2004). *भारत की खोज* (The Discovery of India). नई दिल्ली: पेंगुइन बुक्स।
13. Pandey, R. S. (2010). *भारतीय शिक्षा : समस्याएँ एवं संभावनाएँ* वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन।
14. Pandey, V. (2021). कौशल आधारित शिक्षा और आत्मनिर्भर भारत। *Journal of Emerging Technologies and Innovative Research*, 8(7), 225–231।
15. Radhakrishnan, S. (1962). *शिक्षा, संस्कृति और समाज* नई दिल्ली: राजपाल एंड संसा।
16. Sharma, P., & Verma, D. (2020). Role of education in building self-reliant India. *International Journal of Education and Management Studies*, 10(3), 250–256.
17. Sharma, R. N. (2011). *शिक्षा और भारतीय समाज* नई दिल्ली: अटलांटिक पब्लिशर्स।
18. Singh, M. (2021). नई शिक्षा नीति 2020 और भारतीय शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन। *शिक्षा विमर्श*, 8(1), 55–63।
19. Singh, Y. (1973). *भारतीय परंपरा का आधुनिकीकरण* (Modernization of Indian Tradition). दिल्ली: थॉमसन प्रेस।
20. Tilak, J. B. G. (2013). *भारत में शिक्षा और विकास : सार्वजनिक नीति एवं विकास के महत्वपूर्ण मुद्दे* नई दिल्ली: पालग्रेव मैकमिलन।
21. Tiwari, R. (2022). आत्मनिर्भर भारत अभियान और उच्च शिक्षा की भूमिका। *University News Journal*, 60(14), 18–25.

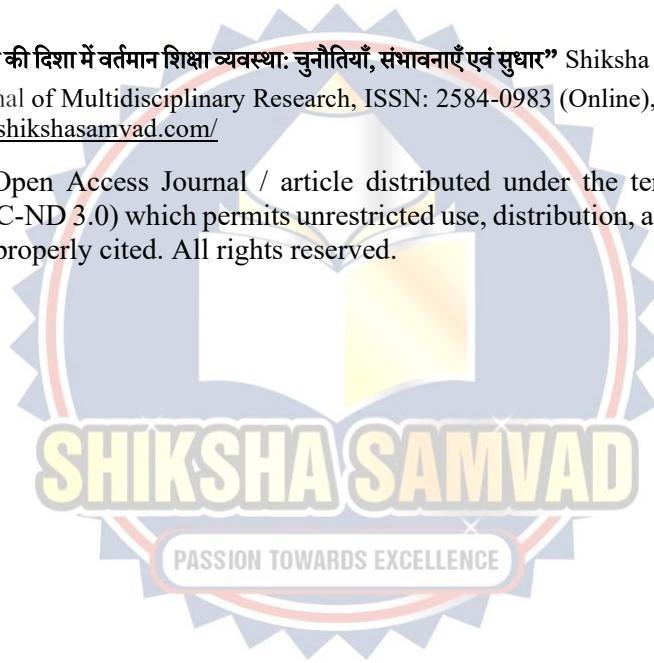
22. UNESCO. (2021). *Reimagining Our Futures Together: A New Social Contract for Education*. Paris: UNESCO Publishing.
23. University Grants Commission. (2020). *भारत में उच्च शिक्षा संस्थानों हेतु गुणवत्ता निर्देश* नई दिल्ली: यूजीसी।
24. Verma, S. (2021). Modernization of Indian education system in the context of globalization. *International Journal of Multidisciplinary Educational Research*, 10(2), 77–85.
25. Yadav, R., & Kumar, S. (2023). Vocational education and self-reliant India: Challenges and opportunities. *Journal of Indian Education*, 49(1), 90–101.
26. गांधी, एम. के. (2009). *शिक्षा पर गांधीजी के विचार* अहमदाबाद: नवजीवन प्रकाशन।
27. भारत का संविधान। (2022). *भारत का संविधान* नई दिल्ली: विधि एवं न्याय मंत्रालय, भारत सरकार।
28. शुक्ल, ए. (2021). वर्तमान शिक्षा व्यवस्था और आत्मनिर्भर भारत। *समकालीन शिक्षा शोध पत्रिका*, 6(3), 40–48।

Cite this Article:

डॉ. संतोष कुमार भारती, “आत्मनिर्भर भारत की दिशा में वर्तमान शिक्षा व्यवस्था: चुनौतियाँ, संभावनाएँ एवं सुधार” Shiksha Samvad International Open Access Peer-Reviewed & Refereed Journal of Multidisciplinary Research, ISSN: 2584-0983 (Online), Volume 03, Issue 04, Pp.267-280, June-2026. Journal URL: <https://shikshasamvad.com/>



This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved.





CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

डॉ. संतोष कुमार भारती

For publication of research paper title

आत्मनिर्भर भारत की दिशा में वर्तमान शिक्षा व्यवस्था: चुनौतियाँ, संभावनाएँ एवं सुधार

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-03, Issue-04, Month June 2026.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: <https://shikshasamvad.com/>
DOI:- <https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v3i4.29>